विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 5 अंक: 17 मार्च, 2012

डॉ.मनमोहन सिंह – विश्व हिंदी दिवस 2012 पर संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि 10 जनवरी का दिन हर वर्ष विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं अपितु हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है । राजभाषा और संपर्क भाषा के रूप में लोकप्रिय हिंदी अब अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की ओर अग्रसर है । विकास पथ पर तेज़ी से आगे बढ़ रहे भारत की प्रगति में हिंदी भाषा की भूमिका काफ़ी सशक्त और उपयोगी रहेगी । हिंदी भाषा को विश्व की एक महत्वपूर्ण भाषा होने का गौरव मिले, इसके लिए आप सब का सहयोग अपेक्षित है ।

आप सब को विश्व हिंदी दिवस की बधाई तथा नव वर्ष की शुभकामनाएँ ।

13 दिसंबर, 2011

मॉरीशस में विश्व हिंदी दिवस : 2012

मॉरीशस से एक बार फिर से हिंदी का जय नाद गूँज उठा । हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने तथा संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लक्ष्य से विश्व हिंदी सचिवालय 4 वर्षों से लगातार प्रयासरत है । इसी को ध्यान में रखते हुए सचिवालय ने 10 जनवरी 2012 को मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सभागार में विश्व हिंदी दिवस का भव्य रूप से आयोजन किया । सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने सभी का स्वागत करते हुए मॉरीशस में सचिवालय की स्थापना से लेकर आज तक आयोजित गतिविधियों पर नज़र दौड़ाते हुए इसकी भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री, माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई । साथ ही साथ मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी. सीताराम, सचिवालय की शासी परिषद के सदस्य श्री अजामिल माताबदल और श्री सत्यदेव टेंगर सहित अनेक महानुभावों ने कार्यक्रम में भाग लिया । इस वर्ष अतिथि वक्ता के रूप में वार्सा विश्वविद्यालय से हिंदी विदूषी, प्रो. दानुता स्तासिक को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था ।

मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. बनवारी ने मॉरीशस में हिंदी भाषा की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा - *हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में मॉरीशस हमेशा आगे रहा है । इस बात को दोहराते हुए मुझे हमेशा लगता है कि भारत के बाहर हिंदी शिक्षण के लिए जितनी अच्छी व्यवस्था मॉरीशस में है वह दुनिया में बहुत कम देशों में है ।*

इसके साथ ही पाठशालाओं में इसके लिए जो कार्य हो रहे हैं और

आई.सी.टी. का हिंदी के साथ जो संगम हो रहा है, उसपर डॉ. बनवारी ने बताया - *हम हिंदी और अन्य एशियाई भाषाओं के शिक्षण को आधुनिक बनाने में भी कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं । शिक्षण में आई.सी.टी. का प्रयोग आज एक विकल्प ही नहीं, बल्कि एक आवश्यकता बन गई है और हम इसके लिए पूरी कोशिश कर रहे हैं । एक उदाहरण देना चाहूँगा । प्राथमिक स्तर पर हिंदी पढ़ाने के लिए जो अध्यापक लिए जाते हैं उन्हें प्रशिक्षण के दौरान बाकी सभी जेनेरल पर्पोस अध्यापकों के समान ही आई.सी.टी. पढ़ाई जाती है ।*

हिंदी अध्यापकों का प्रोत्साहन बढ़ाते हुए डॉ. बनवारी जी ने कहा - *शिक्षा मंत्री होने के नाते अध्यापकों से मेरी यही माँग होगी कि वो हिंदी के शिक्षण में आई.सी.टी. का ज़्यादा से ज़्यादा प्रयोग करें ।* मॉरीशस के इतिहास के पन्नों पर नज़र दौड़ाते हुए तथा इसमें हिंदी एवं अनेक संस्थाओं के योगदान पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया - *यहाँ के लोगों को पहली बार मतदान का अधिकार दिलाने से लेकर हमारे देश की स्वतंत्रता तक हिंदी भाषा का योगदान रहा है और हमारी सरकार आज भी हिंदी के लिए काम कर रही संस्थाओं को पूरा सहयोग दे रही है । इन सब के साथ ही मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना होने से हम लोग अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उभरकर आए हैं ।* पूरे विश्व को हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग देने के लिए डॉ.बनवारी ने कहा - *न सिर्फ दुनिया भर में उसका सम्मान हो रहा है जो मॉरीशस ने अपने इतिहास के दौरान हिंदी के विकास के लिए किया है बल्कि दुनिया भर में हिंदी भाषियों*

को यह संदेश भेजा जा रहा है कि जिस तरह मॉरीशस ने हिंसी को पूरा मान-सम्मन दिया है, उसी तरह विश्व भर के हिंदी भाषी अपना योगदान दें ।

अंत में शिक्षा मंत्री ने संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषाओं में हिंदी को शामिल करने के बारे में कहा - *मेरे अनुसार अब वह ऐतिहासिक समय आ गया है जब भारत सरकार को संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ हमें पूरी ताकत के साथ यह प्रस्ताव रखना चाहिए कि हिंदी भाषा को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया जाए ।*

मॉरीशस में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी.सीताराम ने विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर भारत-मॉरीशस की साझेदारी पर अपने विचार व्यक्त किये - भारत और मॉरीशस की संस्कृति को साथ लेकर चलने की संस्कृति है जिसपर हमें गर्व है । अर्थात हमारी भाषाओं को उसी समावेश की भावना के साथ आगे बढ़ना है । पूरे विश्व में हिंदी भाषा जिस तेज़ गति से फैल चुकी है उसपर बड़े ही स्पष्ट रूप से महामहिम उच्चायुक्त ने बताया - *ये दिल और दोस्ती की ज़ुबान है । हिंदी फ़िल्में और हिंदी गाने दुनिया के उन हिस्सों में लोकप्रिय है जहाँ इस भाषा को कोई नहीं समझता पर आपको उसके गीतों को गुनगुनाते हुए लोग मिल जाएँगे । उसकी धुनों पर थिरकते हुए लोग मिल जाएँगे ।... ये सब कुछ हिंदी की विभिन्न संस्कृतियों की खुशबू को अपने में समेटने की ताकत और अपने खुशबू से दूसरों को मोह लेने की क्षमता का प्रमाण है ।*

विश्व हिंदी दिवस के आयोजन में सचिवालय परंपरागत रूप से हर वर्ष भारत से बाहर एक हिंदी विद्वान को आमंत्रित करता है जो विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में अतिथि वक्ता के रूप में आते हैं । इस वर्ष पोलेंड के वर्साव विश्वविद्यालय की प्रो. दानुता स्तासिक ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम में चार चाँद ला दिया । उन्होंने मध्य युरोप में हिंदी शिक्षण व्यवस्था पर अपने विचार व्यक्त किए तथा उन सभी विश्वविद्यालयों की चर्चा की जो हिंदी से जुड़े हैं । उन्होंने बताया - *इन देशों में हिंदी अध्यापन से जुड़े कुछ विद्वान विश्व के जाने-माने हिंदी विद्वानों में से हैं ।... ये छात्र जो पॉलिश हैं, हंगरियन हैं, बल्गारियन हैं, अपनी रुचि की प्रेरणा से हिंदी और भारत के शास्त्र पढ़ते हैं ।...* हिंदी के इतिहास पर नज़र दौड़ाते हुए तथा उसमें पोलेंड की सहभागिता पर बोलते हुए उन्होंने बताया - *पोलेंड में भारत और भारतीय संस्कृति में रुचि लेने की पुरानी परंपरा है ।*

इसका सर्वप्रथम दस्तावेज़ सन् 1596 में भारत में गोआ में लिखित एक पत्र है जिसके लेखक एक पॉलिश शिस्ताव वार्स्कि थे और जिनके वक्तव्य से पता चलता है कि मात्र सोलह शताब्दी से ही पोलेंड के लोगों को भारत को जानने की बड़ी जिज्ञासा थी और आज भी ये बात सही है । प्रो. दानुता स्तासिक ने पोलेंड में हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए बताया - *वर्सावि में सन् 1931 में भारत विद्या विभाग खोला गया ।... शुरू में भारत विद्या विभाग का प्रमुख क्षेत्र संस्कृत भाषा, प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन थे पर शीघ्र ही इस केंद्र में हिंदी भाषा और साहित्य का भी अध्ययन-अध्यापन प्रारंभ हो गया ।... विभाग का नाम दक्षिण एशिया विभाग में बदल दिया गया ।*

इस वर्ष के समारोह की अलग ही विशेषता रही । विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर मॉरीशस में प्रथम बार के लिए "हिंदी के हज़ार वर्ष" का मंचन किया गया जिसमें हिंदी भाषा की एक हज़ार वर्ष लंबी यात्रा की संगीतात्मक व कलात्मक प्रस्तुति की गई । इस प्रस्तुति में अपभ्रंश से प्रारंभ होकर हिंदी के इतिहास के अनेक महत्वपूर्ण पड़ावों से होते हुए आधुनिक युग में अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी की स्थापना तक की कहानी सुनाई गई ।

इस अवसर पर श्री दर्शन पुरोहित ने आदिकाल के कवि चंद बरदाई कृत पृथ्वीराज रासो से उद्धृत राजा पृथ्वीराज के युद्ध पर निकलने के दृश्य का वर्णन एक नृत्य प्रस्तुति से किया । पृथ्वीराज रासो हिंदी का प्रथम महाकाव्य माना जाता है अत: हिंदी साहित्य जगत की पहली उपलब्धि ।

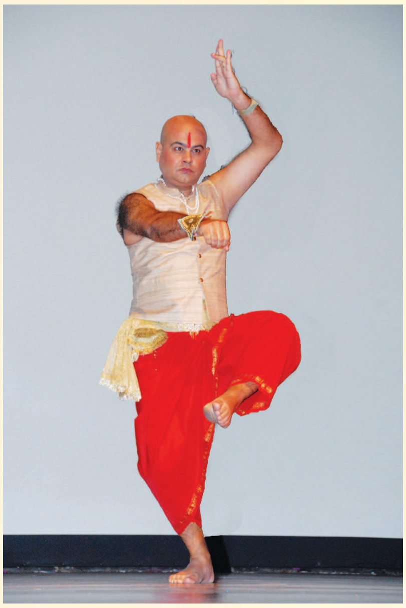

अमीर खुसरो खड़ीबोली हिंदी के प्रथम कवि हैं । हिंदी की विकास यात्रा में उनका योगदान अतुलनीय है । हिंदी की ऐतिहासिक यात्रा की प्रस्तुति को आगे बढ़ाते हुए इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के छात्रों ने अमीर खुसरो के छाप तिलक पद को कथक नृत्य द्वारा प्रस्तुत करके सभागार को मुग्ध कर दिया ।

भक्तिकाल में जब मुग़लों के शासन और अपने ही लोगों के अत्याचार से जनता पीड़ित थी, ऐसी विषम स्थिति में जब भक्ति ही उनके दुखों को कम करने का साधन था, ऐसे में हिंदी ही प्रभु के गुणगान की भाषा बनी । इसी को दर्शाते हुए महात्मा गांधी संस्थान के छात्रों ने तुलसी और मीरा के पदों को नृत्य में पिरोकर दर्शकों को भक्तिमय आनंद प्रदान किया ।

हिंदी भाषा साधारण आदमी के भाव और मोहन राकेश की वेदना दोनों को ही अभिव्यक्त कर पाती है । हिंदी किसी भी भाव की अभिव्यक्ति की भाषा है । श्री दर्शन पुरोहित ने इसी पर आधारित मोहन राकेश के आषाढ़ का एक दिन के एक अंश को अभिनीत किया ।

जब कवि निराला ने ब्रिटीश शासन की बेड़ियों से मुक्ति के लिए भारत की जय विजय का नारा लगाया, तब वह भी हिंदी भाषा के माध्यम से हुई । हिंदी स्वतंत्रता की भाषा है । इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के छात्रों ने भारती जय विजय करे पर एक नृत्य प्रस्तुत किया ।

हिंदी बेज़ुबानों, असहाय, गरीबों की भी भाषा बनी । उनके दुखों की अभिव्यक्ति प्रेमचंद ने अपनी कहानी कफ़न में की । श्री विनय दसोई की टोली के अभिनेताओं ने कफ़न कहानी के एक दृश्य का अभिनय किया ।

हिंदी की इस विकास यात्रा का चरमोत्कर्ष हिंदी सिनेमा की प्रतीकात्मक प्रस्तुति से किया गया जो वर्तमान संदर्भ में हिंदी भाषा के अंतर्राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार में उसके योगदान को उभारता है । एम. जी. आई. और इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के छात्रों ने स्लमडोग मिलियोनेर फ़िल्म के जय हो गाने पर एक नृत्य प्रस्तुत किया जिसके साथ ही इस रंगीन हिंदीमय कार्यक्रम की समाप्ति हुई । मंच संचालन विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने किया ।

विश्व हिंदी दिवस, 2012 : विश्व भर में

सन् 1975 में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का शुभारंभ 10 जनवरी को नागपुर, भारत में हुआ था । हिंदी के इस ऐतिहासिक दिवस को याद रखने तथा पूरे विश्व में हिंदी के प्रचार-प्रसार का अनुकूल वातावरण बनाने के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने सन् 2006 में यह निर्णय लिया था कि 10 जनवरी पूरे विश्व में विश्व हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाएगा । 2006 से लेकर प्रतिवर्ष विश्व भर में विश्व हिंदी दिवस को भव्य रूप से मनाया जाता है । इस वर्ष भी विश्व के कोने-कोने में विश्व हिंदी दिवस की धूम मची ।

भारत

11जनवरी, 2012 को नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (IGNOU) में विश्व हिंदी दिवस धूम-धाम से मनाया गया । इस अवसर पर इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी के कुलपति, श्री एम. अस्लम ने कहा कि हिंदी पूरे देश को एकसूत्र में बाँधने वाली भाषा है । हिंदी भाषा का प्रचार दबाव से नहीं बल्कि स्वेच्छापूर्ण तरीके से होना चाहिए । विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रश्नोत्तरी तथा टंकन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । कार्यक्रम में भारी मात्रा में हिंदी प्रेमी उपस्थित थे ।

अहमदाबाद में भी महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ परिसर में बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया ।

कुवेट

कुवेत के भारतीय उच्चायोग द्वारा 10 जनवरी, 2012 को विश्व हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया । दीप प्रज्वलन के बाद भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री सतीश सी.मेहता ने भारत के प्रधान मंत्री का संदेश पढ़ा । इस समारोह में 12 भारतीय पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया । छात्रों ने दैनिक जीवन में हिंदी की उपयोगिता और महत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए हिंदी भाषा के उत्थान तथा उसके द्वारा विश्व में भारतीयों के उत्थान के महत्व को भी उभारा । इस अवसर पर कुछ छात्रों ने सरस्वती वंदना तथा राजस्थानी लोक नृत्य की भी प्रस्तुति की ।

पुर्तगाल

10 जनवरी, 2012 को लिस्बन विश्वविद्यालय के फकुल्दाद द लेत्रश (कला संकाय) के रंगभवन में लिस्बन स्थित भारतीय दूतावास और लिस्बन विश्वविद्यालय के कला संकाय के सहयोग से विश्व हिंदी दिवस 2012 का आयोजन किया गया । इस अवसर पर हिंदी और भारत के बढ़ते प्रभाव की चर्चा के साथ एशियन अध्ययन में हिंदी भाषा और संस्कृति के पाठ्यक्रम के महत्व तथा विदेशी भाषाओं के शिक्षण और भूमंडलीकरण के युग में उनकी उपयोगिता पर वक्तव्य प्रस्तुत किए गए । हिंदी छात्रों द्वारा भारतीय शास्त्रीय नृत्य भरतनाट्यम् तथा 'वास्को द गामा की भारत यात्रा' हिंदी नाटक की प्रस्तुति भी की गई । तदुपरांत भारतीय दूतावास की ओर से कला संकाय के पुस्तकालय को पुस्तकार्पण किया गया और हिंदी के सभी छात्रों को भी पुरस्कार दिए गए । विश्व हिंदी दिवस 2012 का समापन कल हो ना हो गाने से किया गया जिसके गायन में हिंदी के छात्रों के साथ साथ उपस्थित दर्शकों ने भी अपनी आवाज़ दी ।

जापान

जनवरी 2012 में भारत के कौंसुलावास (ओसाका, जापान) में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया । ओसाका-कोबे के भारत के कौंसुलाध्यक्ष व विश्व-प्रसिद्ध कथाकार (स्लमडॉग मिलियनेयर के कथा-लेखक) महामहिम विकास स्वरूप ने प्रधान-मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का संदेश पढ़ा और हिंदी के विकास और प्रयोग की वैश्विक संभावनाओं के प्रति अपना विश्वास जताया । ओसाका विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर एमिरेटस डॉ. तोमिओ मिज़ोकामि और हिंदी विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर डॉ. आकिरा ताकाहाशि ने जापान व विश्व में भारत और हिंदी की बढ़ती ताकत पर सकारात्मक विचार व्यक्त किए तथा हिंदी-कथाकार व विज़िटिंग प्रोफ़ेसर डॉ. हरजेंद्र चौधरी ने आयोजन को एक गंभीर साहित्यिक आयाम देते हुए हाल ही में प्रकाशित अपने कहानी-संग्रह 'पता नहीं क्या होगा' से एक मार्मिक कहानी अन्नपूर्णा का प्रभावपूर्ण पाठ किया ।

इस अवसर पर जापानी कवि शुंतारो की दो कविताओं के हिंदी-अनुवादों का पाठ किया गया तथा मराठी-भाषियों द्वारा बोली जाने वाली हिंदी की कुछ मनोरंजक विशेषताओं पर सोदाहरण टिप्पणी प्रस्तुत की गई । अंत में ओसाका विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए हिंदी भाषा संबंधी एक प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया ।

इज़रायल

12 जनवरी, 2012 को इज़रायल के तेल-अवीव विश्वविद्यालय में विश्व हिंदी दिवस बड़े धूम-धाम के साथ मनाया गया । इस विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस मनाने की परंपरा सन् 2000 से शुरू हुई थी जब पूर्वी एशिया अध्ययन विभाग में हिंदी का कोर्स आरंभ हुआ था । यहाँ विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर भाषणों से अधिक विद्यार्थियों की गतिविधियों को प्राथमिकता दी जाती है । नाटक, कविता, गीत और फ़िल्मी संवाद बनकर हिंदी भाषा एकदम प्राणवान और कहीं ज़्यादा आकर्षक बन जाती है । इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस का विषय था भारत का साहित्य । भारतीय साहित्य की चर्चा करते हुए छात्रों ने पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित दो नाटक तथा प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि के एक अंश पर आधारित एक नाटक का सफ़ल मंचन किया । विद्यार्थियों ने हिंदी फ़िल्मों के एकाध दृश्यों को भी अभिनीत किया और कई गाने गाए । समारोह के अंत में भारतीय साहित्य और संस्कृति पर प्रश्नोत्तरी की गई और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया ।

पोर्ट ऑफ़ स्पेन

29 जनवरी, 2012 को पोर्ट ऑफ़ स्पेन में महामहिम उच्चायुक्त के

निवास स्थल पर विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर महामहिम उच्चायुक्त श्री मलय मिश्र ने भारत के प्रधान मंत्री जी का संदेश पढ़ा और हिंदी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया । राष्ट्रीय भारतीय संस्कृति परिषद के अध्यक्ष श्री देवकीनन्दन शर्मा जी ने प्रमुख वक्ता के रूप में त्रिनिडाड एवं टोबैगो में हिंदी की स्थिति पर प्रकाश डाला । इस वर्ष का विशिष्ट हिंदी सेवा सम्मान पंडिता डॉ. इंद्राणी रामप्रसाद को दिया गया । साथ ही प्रमुख संगठनों और स्कूलों के प्रतिनिधियों को पुस्तकें, शब्दकोश, रामायण इत्यादि भेंट की गईं । इस अवसर पर सुश्री अलीशा खान कृत "हिंदी शिक्षण" पर आधारित पुस्तक की सी.डी. का विमोचन किया गया । दिसंबर 2011 में सभी शिक्षण केंद्रों में हिंदी पठन, वार्तालाप एवं श्रुतलेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थीं । हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया । हिंदी छात्र-छात्राओं ने इस अवसर पर हिंदी कविता पाठ, गज़ल, भजन आदि प्रस्तुत करके समाँ बांध दिया । हिंदी शिक्षिका सुश्री नीलम राजकुमार ने अपने देश त्रिनिडाड एवं टोबैगो के बारे में हिंदी में कुछ विचार प्रस्तुत किए जिनका अंग्रेज़ी अनुवाद हिंदी शिक्षक श्री रफ़ी हुसैन ने किया ।

गयाना

9 जनवरी 2012 को गयाना बर्बिस विश्वविद्यालय के प्रांगन में, गयाना हिंदी प्रचार सभा द्वारा विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया था जिसमें साहित्यिक प्रदर्शनी, संगीत, नृत्य और हिंदी भाषण की प्रस्तुतियाँ हुईं । इस अवसर पर सुश्री वार्षणेय सिंह ने कहा कि हिंदी बहु-सांस्कृतिक भाषा है, यह केवल हिंदुओं की भाषा ही नहीं बल्कि अफ़्रीकी और मुस्लिमों की भी भाषा है ।

दोहा

11 जनवरी, 2012 को भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, दोहा में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । इस अवसर पर दोहा, कतार की भारतीय उच्चायुक्त महामहिम दीपा गोपालन वाध्वा ने हिंदी को भारत की एकता की शक्ति के रूप में दर्शाया साथ ही भारत के प्रधान मंत्री का संदेश भी पढ़कर सुनाया । समारोह में अलग-अलग पाठशालाओं के हिंदी छात्रों ने अपनी कला से सभागार को मुग्ध कर दिया । भाषण, नाटक, एकांकी, हिंदी कविता पठन आदि की प्रस्तुतियाँ हुईं । हिंदी के उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत भी किया गया ।

भुटान

10 जनवरी 2012 को नेहरू-वांग्चुक सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, बहुउद्देशीयहॉल में धूम-धाम से विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । इस केंद्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य के साथ प्रति वर्ष विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है । इस अवसर पर कविता-पठन, कहानी-पठन तथा कवियों द्वारा लिखित हिंदी में लेख-पठन का आयोजन भी किया गया था ।

श्री लंका

हमेशा की तरह श्री लंका के भारत के सहायक उच्चायोग (कैंडी) ने 10 जनवरी 2012 को विश्व हिंदी दिवस मनाया । इस अवसर पर भारत के सहायक उच्चायोग के द्वारा स्कूल के बच्चों के लिए हिंदी भाषा की निबंध, कविता, वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम चलाए गए । प्रमुख भारतीय सज्जनों के अलावा श्री लंका के माननीय सज्जनों ने भी उत्सव में भाग लिया । समारोह में छात्रों द्वारा प्रस्तुत नृत्य एवं नाटक ने कार्यक्रम को और रंगीन बना दिया । ध्यान देने योग्य है कि उच्चायोग हिंदी की कक्षाएँ चलाता है और साथ ही अन्य गतिविधियाँ समय समय पर चलाता है ।

9 से 13 जनवरी 2012 को श्री धर्मलोक कॉनवोकेशन हॉल में हिंदी फ़िल्म उत्सव-2012 का भव्य रूप से आयोजन किया गया था । यह उत्सव केलानिया विश्विद्यालय के हिंदी विभाग तथा श्रीलंका के भारतीय उचायोग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया था । श्रीलंका के भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अशोक. के. कांत ने उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर उत्सव की गरिमा बढ़ाई ।

सैन फ़्रांसिसको

भारत के प्रधान कौंसलावास सैन फ़्रांसिसको द्वारा विश्व हिंदी दिवस 2012 का भव्य समारोह अत्यंत उत्साहवर्धक रहा । हिंदी समारोह की महत्ता को ध्यान में रखते हुए और एक अच्छी बड़ी संख्या में हिंदी भाषा प्रेमियों को इस समारोह में सम्मिलित करने के उद्देश्य से कौंसलावास ने इसका आयोजन सैन फ़्रांसिसको में न करके बे एरिया के कुपरटीनो शहर में किया जो कि अपने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और सफ़ल निर्णय रहा । इसके अतिरिक्त बे एरिया के अंतर्गत हिंदी सेवा में संलग्न सभी संस्थाओं को और स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय के शिक्षक वर्ग को एक मंच पर एकत्रित करना भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण कार्य था । इस अवसर पर कौंसल जनरल श्री एन. पार्थसारथी ने कहा कि विश्व में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने से पहले अपने-अपने घरों में और अपने-अपने देश भारत में अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को अपनाना होगा । यदि अंतर्राष्ट्रीय भूमि पर आकर जर्मन व्यक्ति जर्मनी में, फ़्रेंच व्यक्ति फ़्रेंच में भाषण दे सकता है तो भारतीय अपनी भाषा हिंदी में क्यों नहीं बोल सकता ।

भारत, कुवेट, पुर्तगाल, जापान, इज़रायल, पोर्ट ऑफ़ स्पेन, गयाना, दोहा, भुटान, श्री लंका, सैन फ़्रांसिसको के साथ-साथ ***तुर्की, कोलोम्बो, पारामारिबो, न्यू यॉर्क*** और विश्व के अलग-अलग देशों में विश्व हिंदी दिवस मनाया गया । विश्व हिंदी सचिवालय विश्व हिंदी दिवस के सभी आयोजकों को शुभकामनाएँ और धन्यवाद करता है । सचिवालय को आशा है कि विश्व के कोने-कोने में बसे हिंदी विद्वान, हिंदी प्रेमी, हिंदी समाज के प्रयासों के फलस्वरूप हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने का सपना जल्द से जल्द पूरा होगा ।

विश्व हिंदी सचिवालय के आधिकारिक कार्यारंभ की चतुर्थ वर्षगांठ

11 फ़रवरी, 2012 को महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्यम् भारती सभागार में विश्व हिंदी सचिवालय ने अपने आधिकारिक कार्यारंभ की चतुर्थ वर्षगाँठ मनाई। इस अवसर पर महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति श्री विभूति नारायण राय ने अतिथि-वक्ता के रूप में अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई । इस अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन भी किया गया जिसमें श्री राय ने 'वैश्विक संदर्भ में हिंदी' विषय पर अपना बीज वक्तव्य प्रस्तुत किया ।

सचिवालय के उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने समारोह में उपस्थित सभी हिंदी विद्वानों, हिंदी प्रेमियों व हिंदी छात्रों का हार्दिक स्वागत करते हुए उनके प्रति आभार व्यक्त की कि तूफ़ानी मौसम के बावजूद वे उपस्थित हो पाए, यह हिंदी के प्रति उनकी श्रद्धा है और प्रेम भी ।

यह न केवल सचिवालय के लिए बल्कि महात्मा गांधी संस्थान तथा अन्य हिंदी संस्थाओं, हिंदी विद्वानों, हिंदी प्रेमियों एवं छात्रों के लिए हर्ष व सौभाग्य की बात है कि श्री विभूति नारायण राय जैसे प्रतिभा-संपन्न, उच्च कोटि के विद्वान ने स्वयं मॉरीशस आकर अपने विचार, अपना ज्ञान बाँटा तथा हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के आयामों से सबको परिचित कराया।

सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि "2002 के अधिनियम व भारत और मॉरीशस सरकारों की साझेदारी के तहत विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हुई और सचिवालय ने अपना औपचारिक कार्य 11 फरवरी 2008 को आरंभ किया था। सचिवालय का मुख्य कार्य हिंदी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनाना और इसे संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने में सहयोग देना है। प्रति वर्ष उस दिन को स्थापना दिवस मनाने का औचित्य यह है कि उस दिन हम उन व्यक्तियों को भी श्रद्धा से याद करते हैं जिन्होंने इस संस्था की नींव रखी। डॉ. विनोदबाला अरुण, डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र ने अपनी मेहनत से इस पौधे को लगाया। हर संस्था का दायित्त्व होता है कि वह एक कार्यक्रम तैयार करे, पुराने तय किए गए कार्यक्रम पर नज़र डाले, जो अच्छी परंपराएँ थीं उन्हें आगे बढ़ाए, जो कारगर नहीं थी, उनमें आवश्यक संशोधन करे। कार्यक्रम को कार्यान्वित करे और समय-समय पर निष्पादित कार्य की वह शेष कार्य की समीक्षा करे और पुन: दीर्घकाल अथवा लघुकाल के लिए कार्य विधी तैयार करे। यही अच्छे प्रबंधन की नीति है।"

श्रीमती जुनेजा ने श्री विभूति नारायण राय जी का स्वागत करते हुए उनका संक्षिप्त परिचय भी दिया। ''उनके परिचय में मुझे ये शब्द सही प्रतीत होते हैं कि वे आज के परशुराम हैं। क्षत्रीय और ब्राह्मण दोनों धर्म निभानेवाले, एक हाथ में तलवार और एक में कलम पकड़े हुए हैं आज के यह अद्भुत वक्ता हैं, श्री विभूती नारायण राय जी ।'' श्री राय भारतीय पुलीस सेना के वरिष्ठतम अधिकारियों में स्थान पा चुके हैं और हिंदी साहित्य में भी विशेष स्थान रखते हैं । अपने उपन्यासों, व्यंग्य लेखों द्वारा उन्होंने हिंदी साहित्य जगत में सक्रिय योगदान दिया है। इसके अलावा वे ''वर्तमान साहित्य'' पत्रिका के संपादक भी रह चुके हैं और कई पत्र पत्रिकाओं में उनके लेख छपते रहते हैं । वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति के रूप में कार्यरत हैं ।

भारत सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), श्री मीमांसक ने विश्व हिंदी सचिवालय तथा महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि हिंदी का परिप्रेक्ष्य बहुत बड़ा हो गया है और पूरी दुनिया इस भाषा को विस्तृत होते देख रही है । महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एक विद्यालय ही नहीं, यह एक संकल्पना है, हिंदी और उससे जुड़ी संस्कृति की संकल्पना । साथ ही विश्व हिंदी सचिवालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए भारत सरकार अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है ताकि दोनों संस्थाएँ हिंदी के क्षेत्र में अपने सभी प्रयासों को कार्यान्वित कर सके।

मॉरीशस सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए कला एवं संस्कृति मंत्रालय की वरिष्ठ संस्कृति अधिकारी, सुश्री अनुपमा चमन ने हिंदी के क्षेत्र में हो रहे कार्यों की सराहना की । उन्होंने कहा कि हिंदी केवल भारतीय मूल तक ही सीमित नहीं है बल्कि यह भाषा यूरोप और दूसरे देशों तक भी फैल चुकी है । अत: हिंदी एक वैश्विक भाषा है, दुनिया के कोने-कोने में बोली और समझी जाती है।

तत्पश्चात महात्मा गांधी संस्थान और रवींद्रनाथ ठाकुर संस्थान के अध्यक्ष श्री रवींद्रनाथ द्वारका ने सभी का हार्दिक स्वागत किया । उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी संस्थान की स्थापना पैत्रिक भाषाओं के प्रचार के लिए ही हुई थी । उनके शब्दों में ''मुझे लगता है कि हिंदी का बहुत ही उज्जवल भविष्य है । किसी भी देश की प्रगति के लिए अर्थ और व्यापार महत्वपूर्ण होते हैं । आजकल व्यापार के क्षेत्र में हिंदी की माँग भी बढ़ गई है । उदाहरण के रूप में भारत की व्यापार मंडी, जिसमें हिंदी की बहुत बड़ी भूमिका है ।''

समारोह के अतिथि वक्ता श्री विभूति नारायण राय ने वैश्विक संदर्भ में हिंदी विषय पर व्याख्यान देते हुए कई पहलुओं को उभारा। उन्होंने सभी को यह स्मरण कराया कि 1975 में विश्व हिंदी सम्मेलन में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की परिकल्पना की गई थी। और 1997 में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय तथा 2008 में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हुई । दोनों ही संस्थाओं का उद्देश्य एक है, हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाना ।

उन्होंने कहा कि वर्तमान में हिंदी व्यापार, तकनीकी, कंप्यूटर, इंटरनेट, संपर्क की भाषा है। उन्होंने अपने अनुभवों को बाँटते हुए कहा कि महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में दुनिया के अलग-अलग देशों से, अलग-अलग धर्मों से छात्र आकर रुचि के साथ हिंदी की पढ़ाई करते हैं। उनके विश्वविद्यालय में चीनी विद्यार्थी भी हिंदी पढ़ते हैं। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में किसी भी विषय के अध्ययन के लिए कंप्यूटर साक्षरता अनिवार्य है। हिंदी भाषा के अध्ययन में भी कंप्यूटर की अनिवार्यता पर बल दिया जाता है क्योंकि वर्तमान में यही वह माध्यम है जिससे हिंदी भाषा का प्रचार कम समय में अधिक से अधिक हो सकता है। उनका यह भी कहना है कि भारत दुनिया के सबसे बड़े आर्थिक देशों में से एक है। और भारत में व्यापार करने के लिए, हिंदी भाषा संपर्क के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

श्री राय ने हिंदी के वैश्विक रूप को अधिक उभारते हुए कहा कि वर्तमान समाज में इंटरनेट पर हिंदी ब्लॉग्स के माध्यम से हिंदी का बहुत प्रचार हो रहा है, यह सराहनीय बात है । श्री राय के बीज वक्तव्य के बाद एक प्रश्नोत्तर सत्र भी रखा गया जिसमें उपस्थित हिंदी विद्वानों ने श्री राय के साथ तादात्म्य स्थापित करते हुए कई महत्वपूर्ण विचारों का आदान-प्रदान किया।

समारोह के अंत में महात्मा गांधी संस्थान के सृजनात्मक लेखन विभाग के अध्यक्ष तथा मॉरीशस के सुप्रसिद्ध कवि श्री हेमराज सुंदर ने श्री राय को संस्था की साहित्यिक पत्रिका वसंत और रिमझिम की प्रतियाँ भेंट की । सृजनात्मक लेखन विभाग के वरिष्ठ सहायक संपादक (वसंत/रिमझिम) श्री राज हीरामन ने श्री राय को दो पुस्तकें प्रदान की ।

समारोह में महात्मा गांधी संस्थान के स्कूल ऑफ़ इंडियन स्टडीज़ (School of Indian Studies) की अध्यक्ष डॉ. रेशमी रामदोनी, हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. राजरानी गोबिन, संस्था के प्राध्यापक-गण श्रीमती माधुरी रामधारी, डॉ. जयचंद लालबिहारी, श्री विनय गुदारी, डॉ. कृष्ण कुमार झा, डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के निदेशक डॉ. उदय नारायण गंगू, एम.बी.सी. (Mauritius Broadcasting Corporation) की ओर से श्रीमती उमा मूरत गुरबिन, श्री दीपक नोबिन, स्थानीय साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर एवं श्री सूर्यदेव सिबोरथ सहित महात्मा गांधी संस्थान के विद्यार्थी गण उपस्थित थे ।

मंच का संचालन उपमहासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने किया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

तोकियो में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

भारत-जापान राजनयिक संबंध की 60 वीं जयंती के उपलक्ष्य में तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ़ फॉरेन स्टडीज़, तोक्यो के सभागार में 28 से 30 जनवरी 2012 तक तीन-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन हुआ, जिसमें जापान और भारत के अलावा मॉरीशस, त्रिनिदाद, डेनमार्क, अमेरिका आदि अनेक देशों के विद्वानों एवं साहित्यकारों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

उद्‌घाटन सत्र में विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. ताकेशि फुजिइ ने आयोजन समिति के अध्यक्ष के रूप में अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इस विश्वविद्यालय ने 1908 में ही हिंदी भाषा का शिक्षण आरंभ कर दिया था।

मुख्य अतिथि भारतीय राजदूत श्री आलोक प्रसाद ने कहा कि यह वर्ष भारत-जापान मैत्री का हीरक जयंती वर्ष है, जिसका प्रारंभ इस सम्मेलन से हो रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि आज हिंदी एक राष्ट्रभाषा के रूप में ही नहीं, विश्वभाषा के रूप में भी प्रसिद्धि पा रही है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि 74 वर्षीय हिंदी विद्वान, प्रो. तोशियो तनाका ने कहा कि जापानियों में भारतीय संस्कृति, भाषा और जीवन-दर्शन के प्रति स्वाभाविक अनुराग है। उन्होंने बताया कि 1950 में भारत जाकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उन्होंने हिंदी शिक्षा ग्रहण की और तोक्यो विश्वविद्यालय में हिंदी के पठन-पाठन को सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया। महात्मा गाँधी जी से वे इतने प्रभावित थे कि उनके *हिंद स्वराज्य* और *जीवनी* को गुजराती से सीधे जापानी में अनुवाद करने के लिए उन्होंने गुजराती भी सीखी।

त्रिनिडाड से आए राजनयिक श्री हंस हनुमान सिंह ने इतिहास के पन्नों पर नज़र दौड़ाते हुए त्रिनिडाड में गिरमिटिया मज़दूरों द्वारा लाई गई भाषा-संस्कृति पर प्रकाश डाला और शहरों के नाम, हिंदी शिक्षण आदि पर भी बात की। उन्होंने यह भी बताया कि त्रिनिडाड में हिंदी को विदेशी भाषा के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय भाषा के रूप में पढ़ाने की बात उठ रही है।

हंगरी के बुदापेस्ट विश्वविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. मारिया नेज्येशी ने हंगरी में हिंदी के इतिहास पर अपना व्याख्यान केंद्रित किया और कहा कि हिंदी की वर्तमान स्थिति कैसी है। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी के कारण ही वे पूरी दुनिया से जुड़ पाई हैं।

मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि किस प्रकार विदेशों में फल-फूल रहा नया भारतवंशी समाज अपने पुरखों की थाती को सुरक्षित रखना चाहता है। जापान का ही उदाहरण लेते हुए उन्होंने दर्शाया कि किस प्रकार आधुनिकीकरण के यूरोपीय मॉडल को नकारकर अपनी संस्कृति के अनुसार वह आधुनिकता को परिभाषित कर रहा है।

ओसाका विश्वविद्यालय के प्रो. हरजेंद्र चौधरी ने अपने ही बल पर अपना प्रचार-प्रसार कर रही हिंदी पर बात करते हुए बताया कि जापान के विद्वान तन्मयता और समर्पण भाव से हिंदी की सेवा कर रहे हैं, जो प्रेरणादायक है।

दुनिया भर में जिस प्रकार अहिंदी-भाषी हिंदी से जुड़ते जा रहे हैं, उसपर ओसाका के प्रो. तोमियो मिजोकामि ने फ़िल्मी गीतों और संवादों से नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ने का अपना अनुभव बाँटा। उन्होंने *मुगले आज़म, मदर इंडिया* जैसी महत्वपूर्ण फ़िल्मों के संवादों की भव्य पुस्तकें प्रकाशित कर और देश-विदेशों में अपने छात्र-छात्राओं द्वारा हिंदी नाटकों का मंचन कर एक नया इतिहास रचा।

दैनिक *जनसत्ता* के कार्यकारी संपादक और यशस्वी लेखक श्री ओम थानवी ने *अज्ञेय* की जापान में लिखी *अरी ओ करुणा प्रभामय* और *असाध्यवीणा* की चर्चा की और कहा कैदी *अज्ञेय* की जिस पहली कहानी को *प्रेमचंद* और *जैनेंद्र* ने *जागरण* में छापा था, उसकी एकमात्र प्रति इसी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में सुरक्षित है।

डेनमार्क से पधारी डॉ. अर्चना पैन्युली ने कहा कि मातृभाषा को अपर्याप्त महत्व देना अस्वस्थ लोकतंत्र का परिचायक है और मानव अधिकार के खिलाफ़ है।

सम्मेलन के कुशल संयोजक और संचालक प्रो. सुरेश ऋतुपर्ण ने धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए जापानी छात्र-छात्राओं की भारतीय संस्कृति, वेश-भूषा, खान-पान के प्रति रुचि पर प्रकाश डाला और कहा कि ये बच्चे हिंदी सीखकर उद्योग और वाणिज्य के क्षेत्र में दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी बन रहे हैं। भारत में लगने वाले उद्योगों में हिंदी जाननेवाले जापानी युवक-युवतियों की बड़ी माँग है।

इस अवसर पर चर्चित कवि डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने जापानी लोगों के देश-प्रेम और भाषा-प्रेम को भारतीयों में आत्मविश्वास भरने वाला बताया। उसके पश्चात उनके गीतों और मुक्तकों ने देर तक बहुदेशीय श्रोताओं को आनंदित किया। शाम को जापानी बच्चों ने जापानी लोककथा *उराशिमातारो* के आधार पर डॉ. ऋतुपर्ण द्वारा रचित *प्रसन्ना* नाटक का सफल मंचन कर दर्शकों का मन मोह लिया।

दूसरे दिन 29 जनवरी को हिंदी *शिक्षण का वैश्विक परिदृश्य* विषय पर प्रो. तोमियो मिजोकामि, प्रो. मारिया नेज्येशी, डॉ. अर्चना पैन्यूली, प्रो. सुषम बेदी ने अपने अनुभव बाँटे। *हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में हिंदी सिनेमा और संगीत का योगदान* विषय पर प्रो. तोमियो, श्री हंस हनुमान सिंह, श्री ओम थानवी एवं श्री अतुल तिवारी ने अपने विचार सामने रखे। तृतीय सत्र *नई सदी में हिंदी का बदलता स्वरूप* विषय पर डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, श्री जगदीश उपासने, डॉ. पद्‌मजा शर्मा और डॉ. अमिषा अनेजा ने जीवंत चर्चा की। शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम का आरंभ श्री शेखर सेन के कबीर, तुलसी और विवेकानंद पर प्रस्तुत एकल काव्याभिनय और गायन से हुआ। उसके बाद *ससुराल गेंदा फूल, डार्लिंग* आदि गानों से अपार लोकप्रियता हासिल करनेवाली रेखा विशाल भारद्वाज ने अपने गानों से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

तीसरे दिन की शुरुआत *जापान में हिंदी: विविध आयाम* विषय से हुई, जिसमें प्रो. हरजेंद्र चौधरी सहित योइचि सुकुशिता, प्रो. हिदेआकि इशिदा, श्रीमती मिवाको कोइजुका, प्रो. योशिफमि मिजुनो, केइको शिराइ और प्रो. सुरेश ने अपने विचार व्यक्त किए। अंतिम सत्र *सूचना प्रौद्योगिकी एवं जन संचार माध्यमों में हिंदी का अनुप्रयोग* में श्री आर. चंद्रशेखर, श्री गगन शर्मा, डॉ. माधुरी सुबोध और श्री मुनीस शर्मा ने भाग लिया।

दामापन सत्र के मुख्य अतिथि ओसाका में भारत के कौंसलाधीश एवं अंग्रेज़ी उपन्यास *क्यू एंड ए* (जिसपर *स्लमडॉग मिलियनेयर* बनी) के लेखक श्री विकास स्वरूप थे। इस अवसर पर भारतीय संस्था स्वयंप्रभा की ओर से शाल ओढ़ाकर महामहिम विकास स्वरूप, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र और श्री गंदाधरसिंह सुखलाल ने प्रो. ताकेई फुजिइ को सम्मानित किया। डॉ. ऋतुपर्ण ने संगोष्ठी का सार-संक्षेप प्रस्तुत किया और प्रो. ताकेशि ने जापान सरकार, भारत सरकार, प्रतिनिधियों, हिंदी विभाग के छात्र-छात्राओं तथा सहयोगियों के प्रति धन्यवाद-ज्ञापन करते हुए सम्मेलन को सफ़ल बनाने में उनके सक्रिय योगदान के प्रति आभार व्यक्त किया।

अभिव्यक्ति से साभार

यूरोपीय हिंदी संगोष्ठी, स्पेन
15, 16, 17 मार्च 2012

वय्यादोलिद के विश्वविद्यालय एशियन स्टडीज़ ने भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के सौजन्य से वय्यादोलिद, स्पेन में 15, 16, 17 मार्च 2012 को ***विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण : परिदृश्य*** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया । इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य यूरोप के विभिन्न देशों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण पर दृष्टिपात करना था । संगोष्ठी में भारत सहित 21 देशों के 33 प्रतिष्ठित विद्वान सम्मिलित हुए जिन्होंने हिंदी के विश्व रूप पर प्रकाश डालते हुए हिंदी अध्ययन और अध्यापन से संबंधित समस्याओं और उनके निदान पर चर्चा की ।

संगोष्ठी का उद्घाटन वय्यादोलिद विश्वविद्यालय के उपकुलपति, स्पेन में भारत के राजदूत, वय्यादोलिद विश्वविद्यालय की डिप्टी डीन, कासा दे ला इंडिया के निदेशक तथा संगोष्ठी के शैक्षिक निदेशक द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया । विश्वविद्यालय के उपकुलपति प्रो.मार्कोस साक्रिस्तान ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि प्रागैतिहासिक काल से ही वय्यादोलिद शहर तथा विश्वविद्यालय पर एशिया का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है । इन देशों की संस्कृति के प्रभाव से वय्यादोलिद विश्वविद्यालय में एशियाई अध्ययन की परंपरा का सूत्रपात हुआ ।

स्पेन के भारतीय राजदूत श्री सुनील लाल ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने भाषण में हिंदी की संपन्न परंपरा का ज़िक्र करते हुए बताया कि अन्य भारतीय भाषाओं के संपर्क में आने के कारण हिंदी स्वयं लाभान्वित हुई है तथा उसने उन्हें भी लाभान्वित किया है । भारत की 22 स्वीकृत भाषाएँ उसकी बहुभाषिकता की स्थिति को द्योतित करती है तथा राजभाषा के माध्यम से भारत की अनेकता में एकता परिलक्षित होती है । विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र भारतवर्ष 2050 तक सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था के रूप में उभरेगा और अंतर्राष्ट्रीय कार्य बल में महत्वपूर्ण भारतीय साझेदारी के कारण हिंदी अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित होगी ।

प्रो उदय नारायण सिंह ने नया शतक नई दिशा – भारतीय भाषाओं के शिक्षण की समस्याएँ और संभावनाएँ विषय पर अपना बीज वक्तव्य दिया । अंत में प्रो जैसवाल ने संगोष्ठी में 21 देशों से आए हुए सभी गणमान्य प्रतिभागियों का हार्दिक धन्यवाद किया जिनमें विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति श्री विभूति नारायण राय, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के उपाध्यक्ष तथा अन्य महानुभाव सम्मिलित थे ।

संगोष्ठी के प्रथम शैक्षिक सत्र पश्चिमी तथा मध्य यूरोप में हिंदी शिक्षण : वर्तमान परिदृश्य की अध्यक्षता प्रो हर्मन वैन ऑल्फ़ेन ने की । इस सत्र में छः आलेख पढ़े गए ।

कुल मिलाकर यह सत्र हिंदी से आत्मीय रिश्ता जोड़ने की आकांक्षा से युक्त सत्र रहा । इसमें न्यू यूनिवर्सिटी, लिस्बन, विएना विश्वविद्यालय, तोरीनो विश्वविद्यालय, यॉक विश्वविद्यालय, घेंट विश्वविद्यालय, कासा एसिया, माद्रिद, आदि से आए वक्ताओं ने बड़े ही सारगर्भित रूप से अपने-अपने आलेख पढ़े ।

भाषा प्रौद्योगिकि और हिंदी शिक्षण में उसका अनुप्रयोग विषय पर आधारित दूसरे शैक्षिक सत्र के अध्यक्ष थे प्रो अशोक चक्रधर । इस सत्र के प्रारंभ में श्रीश जैसवाल हिंदी के प्रचार-प्रसार में अध्ययन-अध्यापन तथा उसे विश्व भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए कंप्यूटर के अनुप्रयोग पर बल दिया । इसके साथ ही गेदानी श्लोम्पर, डॉ हर्मन वैन ऑल्फ़ेन एवं कविता वाचक्नवी ने इस सत्र में अपने अनमोल विचार प्रस्तुत किए ।

तृतीय शैक्षिक सत्र शेष यूरोप में हिंदी शिक्षण : वर्तमान परिदृश्य पर केंद्रित था जिसकी अध्यक्षता की प्रो मोहन कांत गौतम ।

इस सत्र में स्लोवेनिया विश्वविद्यालय के अरुण मिश्र, ज़ाग्रेब विश्वविद्यालय की बिल्जाना ज़्रनिक, वार्सो विश्वविद्यालय की दानूता स्तासिक, उप्साला विश्वविद्यालय के हैंज़ वर्नर वेसलर, रूसी सरकारी मानविकी विश्वविद्यालय की इंदिरा गाज़िएवा, मॉस्को विश्वविद्यालय की ल्युदमीला खोख्लोवा, बुखारा विश्वविद्यालय की सबीना पोपर्लान तथा एल्ते विश्वविद्यालय की विजया सती ने विचार मंथन कर अपने विचार सामने रखे ।

मोहन कांत गौतम ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हिंदी के विकास की प्रक्रियाओं को हमें देखना है और इस क्षेत्र में आगे बढ़ते

हुए मीडिया का उपयोग किया जा सकता है । संगोष्ठी का चतुर्थ शैक्षिक सत्र हिंदी शिक्षण तथा पाठ्यक्रम संबंधी समस्याएँ तथा समाधान श्री विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । सत्र के प्रारंभ में वर्धा विश्वविद्यालय के जगन्नाथन ने हिंदी की दो प्रमुख समस्याओं – संदर्भानुसार उपयुक्त पाठ्यक्रमों व संदर्भ ग्रंथों की कमी और भाषा शिक्षण में मानकीकरण के अभाव को सामने रखा । उसके पश्चात जे एन यू दिल्ली की वैश्ना नारंग, वारसा विश्वविद्यालय के कैलाश नारायण तिवारी, लुसान विश्वविद्यालय, स्वीट्ज़र्लैंड के नवीन चंद्र लोहानी, सोफ़िया विश्वविद्यालय के नारायण राजू, लिस्बन विश्वविद्यालय के विश्व कुमार सिंह, हैंबर्ग विश्वविद्यालय की तात्याना ओरान्स्क्या, कासा एसिया (बार्सेलोना) की दीप्ति गुलानी तथा लाइडन विश्वविद्यालय (नैदर्लेंड) के मोहन कांत गौतम ने बड़े ही प्रभावशाली ढंग से विषय की गहराई में जाकर अपने-अपने विचार व्यक्त किए ।

गंभीर चिंतन और पारस्परिक विचार विनिमय के बाद सर्वसम्मति से विदेश मंत्रालय के समक्ष कुछ संस्तुतियाँ रखने का निर्णय लिया जो इस प्रकार हैं –

1. आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन, न्यूयॉर्क की प्रमुख संस्तुति ***अंतर्राष्ट्रीय मानक हिंदी पाठ्यक्रम*** की परियोजना को क्रियान्वित किया जाए और उसमें हिंदी के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश किया जाए ।
2. विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण में संलग्न ***भारतीय एवं भारतेतर प्राध्यापकों को*** भाषा शिक्षण, साहित्य शिक्षण प्रविधि, हिंदी व्याकरण, हिंदी का सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ आदि विषयों में प्रशिक्षित किया जाए ।
3. यूरोप में इस प्रकार की शैक्षिक संगोष्ठियाँ विदेश मंत्रालय के सहयोग से ***हर दो वर्ष*** में नियमित रूप से आयोजित की जाएँ । वर्ष 2014 की यूरोपीय हिंदी संगोष्ठी वारसा विश्वविद्यालय में आयोजित करने का प्रस्ताव है ।
4. पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत एक 24 घंटे का ***हिंदी भाषा चैनल*** प्रारंभ किया जाए, जिसमें हिंदी की सभी प्रयुक्तियाँ उपलब्ध हों तथा वेब पर हिंदी की विशाल सामग्री को एक स्थान पर हिंदी अध्येताओं को उपलब्ध कराया जाए ।
5. अंग्रेज़ी से इतर विदेशी भाषाओं को दृष्टि में रखकर मल्टी मीडिया सहित ***हिंदी शिक्षण सामग्री*** का निर्माण किया जाए ।
6. विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए ***स्नातकोत्तर स्तर का पाठ्यक्रम*** विकसित किया जाए ।
7. भारतीय संस्कृत संबंध परिषद द्वारा विभिन्न विदेशी विश्वविद्यालयों में ***हिंदी पीठों की संख्या में वृद्धि*** लाई जाए ।
8. ***हिंदी साहित्य एवं हिंदी शिक्षण की उपयोगी पुस्तकें तथा मल्टी मीडिया सामग्री*** उन सभी विश्वविद्यालयों को विदेश मंत्रालय द्वारा उपलब्ध कराई जाए, जहाँ हिंदी अध्ययन-अध्यापन की सुविधाएँ हैं ।
9. अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के ***डायनमिक पोर्टल पर वर्चुअल क्लास रूम की व्यवस्था*** की जाए, जिसके माध्यम से विदेशों में अध्ययनरत हिंदी विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य तथा हिंदी भाषा के विद्वानों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान उपलब्ध कराए जाएँ ।
10. विश्व में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण से संबंधित उक्त सभी संस्तुतियों के क्रियन्वयन के लिए विदेश मंत्रालय के अतिरिक्त भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा और विश्व हिंदी सचिवाकय, मॉरीशस उत्तरदायित्व लें तथा एतदर्थ प्रभावी परियोजनाएँ बनाए ।

समापन समारोह की अध्यक्षता एशियन स्टडीज़ की प्रो ब्लांका ने संगोष्ठी के सफ़ल आयोजन पर बधाई दी और आशा व्यक्त की कि इस अवधि में हुई विद्वत्तापूर्ण चर्चा –परिचर्चा से सभी प्रतिभागी लाभान्वित हुए होंगे । मुख्य अतिथि के रूप में विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की महासचिव, मॉरीशस की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने संगोष्ठी की सार्थकता को रेखांकित किया । उन्होंने आश्वासन दिया कि विश्व हिंदी सचिवालय संगोष्ठी द्वारा की गई संस्तुतियों पर अपेक्षित कदम उठाएगा । विशिष्ट अतिथि महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के उपकुलपति श्री विभूति नारायण राय ने कहा कि यह संगोष्ठी अपनी उत्कृष्टता के लिए याद की जाएगी । इसने आगामी संगोष्ठियों के लिए मानक स्थापित किए हैं । उन्होंने कहा कि संगोष्ठी द्वारा पारित सभी संस्तुतियों का स्वागत है तथा उनका विश्वविद्यालय इनको क्रियान्वित करने का उत्तरदायित्व लेता है । संगोष्ठी की समाप्ति कासा दे ला इंडिया के निदेशक डॉ गियार्मी रोड्रगेज़ के धन्यवाद ज्ञापन से हुई ।

संगोष्ठी में सभी प्रतिभागियों को स्थानीय परिभ्रमण के लिए ले जाया गया । इस प्रकार स्पेन की पहली तीन दिवसीय संगोष्ठी यूरोप में हिंदी के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ संपन्न हुई ।

प्रो.श्रीश चंद्र जैसवाल
शैक्षिक निदेशक हिंदी संगोष्ठी
वय्यादोलिद विश्वविद्यालय
स्पेन

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव के अकादमिक सत्रों का शुभारंभ

अतंर्राष्ट्रीय हिंदी उत्सव के अकादमिक सत्रों का आयोजन हंसराज कॉलेज में हुआ । 'विदेशों में हिंदी' विषय पर बोलते हुए प्रवासी साहित्यकार उषा राजे सक्सेना जो इस उत्सव के लिए विशेष रूप से इंग्लैण्ड से पधारी थी ने कहा कि विदेशों में प्रवासी साहित्य प्रचुर मात्रा में रचा जा रहा है । वैश्विक परिदृश्य में उसका आकलन होना चाहिए । भाषाविद विमलेश कांति वर्मा ने कहा कि विदेशों में हिंदी भाषा, साहित्य, मीडिया आदि पर काफी काम हुआ है लेकिन भारतीय इससे अनभिज्ञ हैं। कनाडा (टोरंटो) में सरकारी और प्राइवेट स्तर पर हिंदी का शिक्षण हो रहा है लेकिन वह के काम की जानकारी यहां के लोगों को नहीं है । सत्र की अध्यक्षता कर रहे रुस से आए मदनलाल मधु ने कहा कि विदेशों में दो भाषाओं का अध्ययन उपयोगी है । उन्होंने हिंदी का रुसी में और रुसी का हिंदी में अनुवाद कर दोनों देशों को करीब लाने का काम किया ।

'हिंदी और रोजगार ' सत्र की शुरुआत करते हुए हरीश नवल ने कहा कि देश और विदेश में हिंदी भाषा रोजगारपरक है । भारत में मीडिया, पर्यटन आदि क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं । आकाशवाणी दिल्ली के केंद्र निदेशक लक्ष्मी शंकर बाजपेयी ने अनुवाद की आवश्यकता पर बल दिया और रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए हिंदी माध्यम की किताबों की जरुरत पर बल दिया । भारतीय रेलवे के संयुक्त सचिव प्रेमपाल शर्मा ने कहा कि हिंदी में प्रथम दर्जे के रोजगार कम हैं । सिविल सेवा में अंग्रेजी की अनिवार्यता पर चिंता जाहिर की । अध्यक्षता कर रहे संतोष तनेजा ने अंत में कहा कि हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता बढ़ाने की सख्त जरुरत है ।

हिंदी साहित्य - परिप्रेक्ष्य विषय पर बोलते हुए डॉ. अनामिका ने कहा कि आज का साहित्य रोजगार की तलाश में निकले युवाओं से बना है । युवा साहित्यकार विवेक मिश्रा ने कहा कि आज का साहित्य विचारों का साहित्य है और हमें अलग-अलग विचारों को सकारात्मक रूप से देखने की जरुरत है । युवा साहित्यकार डॉ. अजय नावरिया ने कहा कि वो 90 के दशक के बाद साहित्य में आए बदलावों को समकालिन साहित्य का अभिन्न अंग मानते हैं । प्रसिद्ध व्यंग्य लेखक डॉ. प्रेम जन्मेजय ने कहा कि नई तकनीक जैसे एस.एम.एस और ट्विटर के आ जाने से प्राय लोग अपनी प्रतिक्रिया तुरंत दे देते हैं जिस टिप्पणी के रूप में हीं देखा जाना चाहिए पर इससे कहीं न कहीं समाज से चिंतन कम हो रहा हैं । उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि अभावग्रस्त पर व्यंग्य कभी भी नहीं किया जाना चाहिए । उन्होंने व्यंग्य को सकारात्मक रुप से लेने की बात पर जोर दिया । बाल साहित्य पर बोलते हुए प्रसिद्ध बाल साहित्यकार प्रकाश मनु ने इस बात पर जोर दिया कि आज के बच्चों को उचित और सार्थक साहित्य प्रदान करने की जरुरत है क्योंकि टी.वी. तो केवल उन्हें हिंसा और नग्नता के क्रूर पथ पर ले जा रहा है ।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रसिद्ध भाषाविद प्रभाकर श्रोत्रिय ने डॉ. अजय नावरिया के विचारों को सराहा और डॉ. प्रेम जन्मेजय की बातों का हवाला देते हुए कहा कि एक नज़र से देखा जाए तो संपूर्ण साहित्य हीं व्यंग्य है क्योंकि हर लेखक या कवि सीधी बात कहने से बचता है और प्रतिकात्मक रुप में अपनी बात प्रकठ करता है । प्रभाकर श्रोत्रिय ने डॉ. अनामिका की बातों को सही ठहराते हुए कहा कि मनुष्य की समस्या हीं विस्थापन है और उसी विस्थापन के दर्द से सृजनात्मक क्षण उभर कर आते हैं ।

'राजभाषा - चुनौतियां और संभावनाएँ' सत्र में वरिष्ठ हिंदी सेवी नारायण कुमार बने कहा कि सरलीकरण, मानकीकरण और वैश्विकरण के नाम पर राजभाषा के रुप में हिंदी के प्रयोग के सामने प्रश्न चिंह लगाए जा रहे हैं जबकि यह समस्या मनगढ़न्त है और हिंदी के प्रयोग के बिना लोकतंत्र को मजबूती नहीं प्रदान की जा सकती है । डॉ. परमानंद पांचाल ने नागरी लिपि एवं वैज्ञानिकता पर प्रकाश डाला । प्रदीप अग्रवाल ने राजभाषा को बोधगम्य और सहज बनाने पर जोर दिया । इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे बृजकिशोर शर्मा ने अंत में कहा कि हिंदी सभी कार्यों के लिए समर्थ एवं सक्षम भाषा है।

'प्रवासी साहित्य : दृष्टि और दिशा' सत्र में बोलते हुए विनोद अग्निहोत्री ने अमेरिका में साहित्यिक दुकाने बंद होने पर चिंता जाहिर की । प्रवासी युवा साहित्यकार दीपक मशाल ने बाल साहित्य पर विदेशों में हो रहे अल्प कार्यों पर चिंता जाहिर की । उन्होंने प्रवासी साहित्य को तकनीक से जोड़ने की वकालत की । नार्वे से आए सुरेश शुक्ल ने कहा कि प्रवासी साहित्य में अच्छा काम हो रहा है । प्रेमचंद साहित्य विशेषज्ञ डॉ. कमल किशोर गोयनका ने मुख्य वक्ता की जिम्मेदारी निभाते हुए कहा कि प्रवासी साहित्य को सकारात्मक रुप से देखना चाहिए और इसे पाठ्यक्रम में शामिल करने की तरफ कदम उठाना चाहिए ।

उत्सव के दूसरे दिन के अंत में शरतचंद्र पर विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित किताब 'आवारा मसीहा' पर आधारित नाटक का मंचन किया गया । उत्सव के दूसरे दिन का सत्र छात्रों एवं सामान्य हिंदी प्रेमियों के लिए काफी ज्ञानवर्धक रहा । उत्सव के अंतिम दिन कुछ और अकादमिक सत्र और सम्मान समारोह तथा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

अनिल जोशी
सृजनगाथा से साभार

भोपाल में धर्मवीर भारती फैलोशिप शुरू

भोपाल । माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय की पिछले दिनों सम्पन्न हुई महापरिषद, प्रबंध समिति एवं विद्या परिषद की बैठकों में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए । कुलपति प्रो. कुठियाला ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के तीन नए परिसर ग्वालियर, खण्डवा, एवं शहडोल में खोलने का निर्णय महापरिषद की बैठक में लिया गया । ग्वालियर में एडवांस मीडिया टेक्नालाजी एप्लीकेशन सेंटर, खण्डवा में प्रकृति से संवाद केंद्र तथा शहडोल में विकास संचार केंद्र की स्थापना का निर्णय लिया गया । इसके साथ ही विश्वविद्यालय में महर्षि पाणिनी पीठ की स्थापना का निर्णय महापरिषद की बैठक में लिया गया ।

विश्वविद्यालय व न्यूजीलैण्ड के आकलैंड स्थित यूनीटेक इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी के बीच सहभागिता करने का निर्णय महापरिषद में लिया गया । उल्लेखनीय है कि यूनीटेक इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलोजी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय संचार विषय में स्नातक और स्नातकोततर पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं । उक्त इंस्टीट्यूट संचार शिक्षा के क्षेत्र में फैकल्टी आदान-प्रदान, संचार विषय के अध्ययन और समान पाठ्यक्रम संचालित करने के लिए बातचीत करने का निर्णय लिया गया । इसके अतिरिक्त 'धर्मवीर भारती' फैलोशिप प्रारंभ करने का निर्णय महापरिषद में लिया गया । महापरिषद और प्रबंध समिति की बैठकों की अध्यक्षता मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चैहान ने की । बैठक में भारतीय प्रेस परिषद के अध्यक्ष जस्टिस मार्कण्डेय काटजू, वित्त मंत्री राघव जी, नेता प्रतिपक्ष अजय सिंह सहित समितियों के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे ।

प्रो. कुठियाला ने कहा कि रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के प्रो. रामदेव भारद्वाज की विश्वविद्यालय में प्रतिनियुक्ति, प्रसिद्ध पत्रकार व इंडिया टुडे के पूर्व कार्यकारी संपादक जगदीश उपासने को विश्वविद्यालय में सलाहकार पत्रकारिता के पद पर नियुक्त करने का निर्णय प्रबंध समिति में लिया गया ।

भोपाल से चन्दर सोनाने
सृजनगाथा से साभार

नांदेड़ में संपन्न हुआ अखिल भारतीय हिंदी लेखक सम्मेलन

दिल्ली सरकार की हिंदी अकादमी एवं अहिंदी भाषी हिंदी लेखक संघ के संयुक्त तत्वावधान में महान साहित्यकार, चिंतक, समाज सुधारक गुरू गोविंद सिंह महाराज की कर्मभूमि नांदेड़ में आयोजित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय हिंदी लेखक सम्मेलन में देश भर से पधारे विद्वानों ने हिंदी को एकता के सूत्र में बाँधने वाली शक्ति बताते हुए इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल दिया । स्वामी रामानंद तीर्थ विश्वविद्यालय के सायंस कॉलेज के भव्य सभागार में विभिन्न सत्रों में चर्चाएँ, कवि सम्मेलन, प्रदर्शनी तथा सम्मान समारोह के दौरान बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय लेखक, पत्रकार, अध्यापक, राजभाषा अधिकारी, शोध छात्र तथा विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी कार्यालयों के प्रतिनिधि व हिंदी प्रेमी उपस्थित रहे ।

प्रथम दिवस के उद्‌घाटन सत्र में दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का शुभारंभ किया गया । स्थानीय संयोजिका डॉ अरुणा राजेंद्र शुक्ल ने स्वामी रामानंद तीर्थ को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया । अन्य विद्वानों ने नांदेड़ के विषय में अनेक ऐतिहासिक तथ्यों पर अपने विचार व्यक्त किए एवं हिंदी और गुरुगोविंद सिंह के साहित्य दर्शन को एकता का पर्याय बताया । कवि महेंद्र शर्मा द्वारा संचालित कवि सम्मेलन देर रात तक चला जिसमें डॉ महेंद्रपाल काम्बोज, सर्वश्री हर्षकुमार, नरेंद्रसिंह होशियार पुरी, विनोद बब्बर, डॉ कीर्तिवर्द्धन, आदि कवियों ने राष्ट्रीय एकता के विभिन्न रंग बिखेरे ।

द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में हजूर साहिब क्के मुख्य कथाकार ज्ञानी अमरसिंह की उपस्थिति में *गुरु गोविंदसिंह और उनका हिंदी साहित्य* विषय पर परिचर्चा के दौरान अमृतसर के नानकदेव विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष रहे डॉ हरमेन्दर सिंह बेदी ने गुरु गोविंदसिंह रचित विचित्र नाटक को प्रथम आत्मकथा बताया । अन्य वक्ताओं में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी शिक्षण केंद्र, शिमला की अध्यक्षा प्रो जोगेश कौर, इंदौर के डॉ प्रताप सिंह सोढ़ी, हैदराबाद की अहिल्या मिश्र, नांदेड़ की छात्रा श्रीमती पूनम शुक्ल तथा डॉ परमेन्दर कौर भी शामिल थे । इसी सत्र में दो रचनाओं का लोकार्पण भी किया गया ।

द्वितीय सत्र में *अहिंदीभाषी प्रदेशों का हिंदी लेखन* विषय पर परिचर्चा में मुख्य वक्ता विनोद बब्बर ने भारत की आज़ादी के 65 वर्ष बाद भी यहाँ अहिंदीभाषी शब्दों के प्रयोग को अपमानजनक और दुर्भाग्यपूर्ण बताया । उन्होंने मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को दोनों आँखें बताते हुए इनमें संतुलन की आवश्यकता बताई । इस सत्र में डॉ हरि सिंह पाल, डॉ शहाबुद्दीन शेख, डॉ रेखा मोरे, डॉ ज्योति टेलवेकर ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए ।

तीसरे दिन के प्रथम सत्र में श्री ओमप्रकाश पोकार्णा ने सम्मेलन को राष्ट्रीय एकता का महाकुंभ घोषित करते हुए हिंदी के प्रति समर्पित सुरजीत सिंह जोबन तथा विनोद बब्बर को सम्मानित करते हुए उनके साहित्य अवदान की प्रशंसा की । इसी सत्र में *अंतर्राज्यीय भाषायी संवाद* विषय पर हिंदी अकादमी के उपसचिव डॉ हरिसुमन बिष्ट ने मुख्य वक्ता के रूप में आदिकाल से आधुनिक काल तक के इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम व बाद में राष्ट्रभाषा बनने तक हिंदी की राष्ट्रीय पहचान को रेखांकित करते हुए आज के वैश्वीकरण के दौर में हिंदी को संपूर्ण राष्ट्र की आवश्यकता बताया । डॉ बेदी, डॉ कृष्ण नारायण पांडेय, डॉ मान तथा डॉ रमा येवले प्रमुख वक्ता रहे ।

अंतिम सत्र में हिंदी विद्वानों को *भाषा रत्न* सम्मान प्रदान कर उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई । सम्मेलन के दौरान दिल्ली के श्री किशोर श्रीवास्तव की राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रेरक स्लोगनों एवं सामाजिक, सांप्रदायिक विसंगतियों व सद्‌भाव पर निर्मित कार्टूनों, लघु रचनाओं की पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसे सराहा गया ।

इरफ़ान राही की रिपोर्ट

रानी मुखर्जी ने किया अरब के पहले हिंदी रेडियो स्टेशन का उद्‌घाटन

अबूधाबी में भी अब हिंदी के तराने गूंजने लगे हैं । फ़िल्म अभिनेत्री रानी मुखर्जी ने पिछले दिनों यहाँ रेडियो मिर्ची का उद्‌घाटन किया । उल्लेखनीय है कि ये संयुक्त अरब अमीरात में हिंदी का पहला रेडियो स्टेशन है ।

अबूधाबी मीडिया समूह और भारत के टाइम्स समूह के संयुक्त उपक्रम वाले इस रेडियो स्टेशन के उद्‌घाटन समारोह में रानी मुखर्जी ने उम्मीद जताई कि रेडियो मिर्ची अबूधाबी में भी सफ़लता के कीर्तिमान स्थापित करेगा । समूह के सी.ई.ओ. मेल्कम वाल ने कहा कि रेडियो मिर्ची मनोरंजन के साथ-साथ सरकार और दक्षिण एशिया मूल के लोगों के बीच बेहतर संवाद स्थापित करने में भी अहम भूमिका निभाएगा ।

उल्लेखनीय है कि अरब देशों में विज्ञापन का बाज़ार लगभग 4 बिलियन डॉलर का है । इसका ज़्यादातर भाग समाचार पत्रों और समाचार चैनलों को जाता है । कुल विज्ञापनों का एक छोटा सा भाग ही रेडियो के हिस्से में आता है । दूसरी ओर अबूधाबी मीडिया समूह भी अभी आर्थिक संकट के दौर से गुज़र रहा है । कुछ समय पहले ही इस समूह ने अपने 20 प्रतिशत कर्मचारियों की छुट्टी की है । ऐसे में हिंदी रेडियो की शुरुआत यह बताती है कि अरब के इस सबसे बड़े मीडिया समूह को इस बात का यकीन है कि हिंदी उसे आर्थिक संकट से मुक्ति दिलाने में सहायक सिद्ध हो सकती है । मेल्कम वाल को आशा है कि इस नई शुरुआत से अबूधाबी मीडिया की आर्थिक सेहत बेहतर हो सकेगी ।

हिंदी होमपेज से साभार

दिल्ली के प्रगति मैदान में संपन्न हुआ 20 वां विश्व पुस्तक मेला

दिल्ली के प्रगति मैदान में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा आयोजित विश्व पुस्तक मेले का रविवार 4 मार्च, 2012 को समापन हुआ । इस बार मेले में 700,000 से अधिक पुस्तक प्रेमी पहुँचे । हर दूसरे साल लगने वाला यह मेला इस साल युवाओं और बच्चों पर केंद्रित था । इस साल अधिकारों का आदान-प्रदान, खासकर विषय-वस्तु का अंकीकरण और कॉपीराइट के लिए समझौता के संदर्भ में, जैसे मुद्दों पर विचार-विमर्श के लिए एक मंच उपलब्ध कराया गया । ट्रस्ट के निदेशक एम ए सिकंदर ने बताया कि *हमने लोगों में पुस्तकों के प्रति रुचि पैदा करने तथा विभिन्न भाषाओं की भारतीय पुस्तकों की विविधता को प्रदर्शित करने के लिए इस मेले का आयोजन किया ।* यह मेला तीन महत्वपूर्ण अवसरों को ध्यान में रखते हुए आयोजित किया गया । ये अवसर हैं भारतीय सिनेमा के 100 वर्ष पूरे होना, दिल्ली का देश की राजधानी के रूप में 100 वर्ष पूरा करना तथा नोबेल पुरस्कार विजेता कवि रवींद्रनाथ ठाकुर की 150 वीं जयंती ।

देशबंधु डॉट क़ॉम

साहित्य अकादमी में दक्खिनी हिंदी पर डॉ पांचाल का विशेष व्याख्यान

साहित्य अकादमी द्वारा अपने साहित्य मंच के अंतर्गत दक्खिनी हिंदी पर विशेष व्याख्यान के लिए हिंदी के ख्याति प्राप्त विद्वान डॉ परमानंद पांचाल को आमंत्रित किया गया । डॉ परमानंद पांचाल ने हिंदी भाषा और साहित्य के क्रमिक विकास पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दक्खिनी हिंदी, हिंदी साहित्य के इतिहास की एक महत्वपूर कड़ी है, जिसके अध्ययन के बिना समग्र हिंदी साहित्य का अनुशीलन और परिशीलन अधूरा है ।

दिल्ली के अनेक लब्धप्रतिष्ठि विद्वानों के समक्ष दिए गए अपने एक घंटे के भाषण में डॉ पांचाल ने उदाहरण देते हुए स्पष्ट किया कि दक्खिनी, वास्तव में हिंदी का वह पूर्व रूप है जिसका विकास दक्षिण भारत के मुस्लिम सुलतानों के राज्यों में 13 वीं से 18 वीं शती में हुआ था । अमीर खुसरो (1253-1325) साहित्य में जिस खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग कर रहे थे, उसका विकास कतिपय ऐतिहासिक कारणों से उत्तर में न होकर दक्षिण प्रदेशों में *दक्खिनी* के रूप में हुआ था । खड़ी बोली को साहित्य में उँगली पकड़कर चलना सिखाने वाले ये दक्षिणात्य ही थे । महापंडित राहुल सांकृत्यायन के एक कथन को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा कि खड़ी बोली हिंदी के सर्वप्रथम कवि ये दक्खिनी के कवि ही थे ।

इतिहास के परिप्रेक्ष्य में देखें तो उत्तर और दक्षिण के बीच भाषाई संबंध आरंभ से ही रहे हैं । किंतु अलउद्दीन खिल्जी के देवगिरी पर आक्रमण के बाद 1327 ई में जब मुहम्मद तुगलक ने दौलताबाद को राजधानी बनाया तो दिल्ली के लोगों को वहाँ बसने का आदेश दिया गया । उत्तर के सैनिक व्यापारी और अनेक पेशवर लोग वहाँ बस गए । दिल्ली को पुनः राजधानी बनाए जाने पर भी सभी लोग वापस नहीं आए । वे अपने साथ दिल्ली के आस-पास ही जिस भाषा को ले गए थे उसी का विकास वहाँ दक्खिनी के रूप में हुआ । उन्हें इस्लाम की मुख्यधारा से जोड़े रखने के लिए उत्तर से उनकी भाषा को जानने वाले धर्म गुरु और सूफ़ी संत दक्षिण बुलाए गए । 90 वर्ष की आयु में ख्वाजा बन्दानवाज़ गेसू दराज गुलबर्ग पहुँचे । उनकी सूफ़ी रचनाओं को दक्खिनी की आरंभिक रचनाएँ माना जाता है ।

समय-समय पर विभिन्न कवियों द्वारा इस भाषा को हिंदवी, हिंदी, गुजराती और दक्खिनी कहा गया जो मुख्यतः फारसी लिपि में थी । दक्खिनी पर ब्रज, अवधी, राजस्थानी और पंजाबी के साथ-साथ मराठी, तुलगु, कन्नड़ का भी प्रभाव पड़ा था । इसमें अरबी, फारसी के शब्द भी प्रचुर मात्रा में थे । फिर भी इसकी मूल प्रवृत्ति हिंदी की ही नहीं रही । बहमनी, कुतुबशाही, आदिलशाही और निजामशाही काल में दक्खिनी के सैकड़ों कवियों ने अपनी रचनाएँ खड़ी बोली में की । वहाँ की सुल्तानों ने स्वयं भी दक्खिनी हिंदी में साहित्य रचना की । इस काल में मुल्ला वजही का सब रस और कुतुब मुश्तरी, इब्राहीम आदिलशाह का नवरस, जानम का इर्शादनामा आदि अनेक रचनाएँ लिखी गईं । उत्तर भारत की तरह अनेक प्रेमाख्यानक काव्यों की रचना दक्खिनी में भी हुई । इनमें *निशाती का फूलवन, मुकीमी का चंदर बदन* व *महियार* आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । अभी तक हिंदी में इनका तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है, जो एक चुनौती है ।

डॉ पांचाल ने कहा कि उत्तर भारत में जिस काल में सूर, तुलसी और मीरा की स्वर लहरियाँ गूँज रही थीं, केशव और बिहारी की श्रृंगारिक रचनाओं से सर्वत्र मादकता व्याप्त थी, उसी समय *नवरस* और *सबरस* जैसी रचनाओं से दूर दक्षिणापथ का जन मानस भी रस विभोर हो रहा था । इस साहित्य को जब तक हम हिंदी साहित्य की धरोहर नहीं मानेंगे तब तक हिंदी साहित्य का इतिहास अधूरा ही रहेगा और हिंदी भाषा का समग्र अध्ययन भी अपूर्ण रहेगा । अब समय आ गया है कि हिंदी साहित्य के इतिहासकारों को अमीर खुसरों से भारतेंदु काल तक के खड़ी बोली के हिंदी साहित्य को खोजना होगा, और वह उन्हें दक्खिनी के रूप में ही मिलेगा ।

डॉ पांचाल ने कहा कि वली दकनी के बाद यही खड़ी बोली पुनः दिल्ली लौटती है तो हमें इसका विकसित रूप प्राप्त होता है । यही आज की परिनिष्ठित हिंदी और है उर्दू का पूर्व रूप है । डॉ उदय नारायण तिवारी ने भी माना है कि दक्खिनी हिंदी दक्षिण में ले जाई गई दिल्ली की बोली है, जो बाद में अपने साहित्यिक रूप में दिल्ली में आकर फिर प्रतिष्ठित हो गई ।

डॉ परमानंद पांचाल ने बताया कि उनके द्वारा संपादित दक्खिनी के 51 कवियों की रचनाओं का एक संकलन साहित्य अकादमी ने प्रकाशित किया है, किंतु अभी भी अपार साहित्य फारसी लिपि में अछूता पड़ा है । इसका देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण होना चाहिए । आज हिंदी के अध्येताओं और शोधार्थियों के सामने सबसे बड़ी समस्या दक्खिनी हिंदी के कोश का न होना है । इस अभाव की पूर्ति के लिए भी साहित्य अकादमी जैसी राष्ट्रीय संस्था को आगे आना होगा ।

अंत में साहित्य अकादमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने सभा में उपस्थित सभी अगुन्तकों को धन्यवाद दिया । इस अवसर पर पद्मश्री डॉ श्याम सिंह शशि, डॉ गोयनका, डॉ ठाकुरदास, डॉ इंद्र सेंगर, डॉ बाछोतिया तथा अन्य गणमान्य विद्वान उपस्थित थे ।

विनोद बब्बर

'आधुनिक हिंदी काव्य में दलित वर्ग' समीक्षा शोध प्रबंध के लिए बेंगलूर के हिंदी लेखक डॉ. टी. रविन्द्रन को 'हिंदी साहित्य परिषद', अहमदाबाद का डॉ. सी. एल. प्रभात शोध समीक्षा पुरस्कार 2010-2011 के लिए संप्रदत्त है । यह अखिल भारतीय पुरस्कार है । हाल ही में अहमदाबाद में डॉ. टी. रविन्द्रन का सम्मान किया गया है । गुजरात की महामहिम राज्यपाल डॉ. कमला बेनीवाल जी के करकमलों से यह पुरस्कार दिया गया है । डॉ. रविन्द्रन संेत जोसेफ़ पूर्वस्नातक महाविद्यालय, बेंगलूर में हिंदी प्रवक्ता हैं । हिंदी में आपने कई ग्रंथों एवं कविताओं की रचना की है ।

संपादकीय

विश्व में जैसे भारतवंशियों की उपस्थिति बढ़ रही है, वैसे ही हिंदी और उसकी उपस्थिति में भी दिनोदिन प्रगति हो रही है । भारत अब विश्व के एक महत्वपूर्ण बाज़ार के रूप में उभर रहा है । इन परिस्थितियों में विश्व में हिंदी का भविष्य बेहतर ही होगा ।

भारतीयों का दुनिया के देशों मे पर्यटन के लिए आवाजाही हो, वाणिज्य के लिए प्रस्थान हो, विदेशों में विद्यार्थियों का आना-जाना हो, भारतीय फ़िल्मों का आकर्षण हो, विशेष मसालों से बने भारतीय खान-पान हों, रंग-रंगीले पोशाक हों और भारत के प्रत्येक प्रांतों की विविधता और इसके अलावा बहुत कुछ; सबने मिलकर विश्व में भारतीय संस्कृति की एक विशेष महत्ता स्थापित की है । इन सब को एक सूत्र में गूँथने वाली भाषा है *हिंदी* । एक दशक पहले जब दो अनजान भारतीय विदेश में मिल जाते थे तो अंग्रेज़ी में बात करते थे परंतु अब देखने को मिलता है कि हिंदी में आपसी संप्रेषण करना ही वे अधिक पसंद करते हैं । विश्व भर के अनेक देशों में जनवरी में मनाया गया विश्व हिंदी दिवस इस बात का सबूत है कि प्रवासी भारतीयों को आपस में जोड़ने का काम करती है हिंदी ।

आज के युग में सांस्कृतिक कड़ियों से भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है देशों के आपस में वाणिज्य तथा आर्थिक हित । भारत की भी इस क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका है । बड़े शहरों से हटकर (जहाँ कुछ हद तक अंग्रेज़ी साथ दे सकती है), यदि भारत के छोटे शहरों और कस्बों तक व्यापार पहुँचाना है तो हिंदी को अपनाना एक अनिवार्यता है ।

इस यथार्थ को पहचानना होगा कि आज विश्व में हिंदी सीखने, बोलने की मांग है और इसे हमें प्रोत्साहित करना होगा । जिन देशों में हिंदी पढ़ाई जाती है वहाँ पर भाषा और उसके साहित्य को नई कंप्यूटर-आधारित तकनीकों से जोड़ना होगा । हिंदी शिक्षण के फैलाव को बढ़ाने के साथ-साथ उसका आधुनिकीकरण करना होगा जिससे कि नई युवा पीढ़ी भी इसकी ओर आकर्षित हो । यह इंटरनेट का युग है, अंतर जाल के ताने बाने की लहरों में हिंदी वैश्विक भाषा के रूप में और अधिक उभरे, इसके प्रयास करने होंगे । और इस प्रयास में व्यक्ति, संस्थाओं और सरकार सभी को जुड़ना पड़ेगा; तो निस्संदेह हिंदी भी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा अवश्य बन पाएगी ।

विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस, आधिकारिक कार्यारंभ दिवस, जापान और स्पेन में आयोजित हो रहे हिंदी कार्यक्रम, अबु धाबी में हिंदी रेडियो चैनल और आने वाले दिनों में आयोजित होने वाले अन्य कार्यक्रम इसी लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे । आप जिस देश में भी हों और हिंदी से संबंधित जो भी कार्यक्रम हो रहे हों, विश्व हिंदी सचिवालय को जल्द से जल्द भेजने की कृपा करें, और इस महायज्ञ में अपना योगदान दीजिए ।

श्रीमती पूनम जुनेजा
महासचिव,
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल,
उपमहासचिव
विश्व हिंदी सचिवालय,
मॉरीशस

विश्व हिंदी समाचार प्राप्त हुआ । बहुत अच्छा लगा । मेरी मॉरीशस यात्रा पर श्री अरविंद का आलेख अत्यंत ही सराहनीय है । श्री गंगाधरसिंह सुखलाल जी ने अपनी संपादकीय में गागर में सागर भर दिया है । बहुत ज्ञानवर्द्धक संपादकीय है । उपयोगी लिंक भी दिए हैं । भूपेन हजारिका, श्रीलाल शुक्ल, जगजीत सिंह, देव आनंद, शम्मी कपूर सरीखे लोगों की श्रद्धांजलि अन्य जानकारियों सहित उपलब्ध कराना इस अंक की सार्थकता में चार चाँद लगा गया । श्रीमती पूनम जुनेजा जी एवं विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस की पूरी टीम को कोटिश: बधाई ।

डॉ रविकांत दुबे

श्रीमती पूनम जुनेजा तथा श्री गंगाधरसिंह सुखलाल जी,

अंतर्जाल पर विश्व हिंदी समाचार प्राप्त करके प्रसन्नता हुई । तदर्थ आभार । विशेष रूप से विश्व हिंदी पत्रिका – 2011 का महत्वपूर्ण प्रकाशन प्राप्त कर मन गर्व और हर्ष से झूम उठा । विश्व के सभी देशों में हिंदी के प्रचार एवं प्रसार का विस्तृत विवरण अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक है । जो संपादकों के अथक परिश्रम, योग्यता एवं लगन का परिचायक है । सभी हिंदी प्रेमियों ने भी पूरे मनोयोग से इसके प्रकाशन में सहयोग दिया है – ये बात उत्साहवर्द्धक है । वस्तुत: हिंदी को भारत में ही महिमा-मंडित करने की अत्यधिक आवश्यकता है । विदेश में तो हिंदी अतिशयता से फल-फूल रही है । इस उच्च कोटि के प्रकाशनार्थ आप दोनों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ । भविष्य में आप इसे और भी अधिक ऊँचाइयों तक ले जाएँगे - ऐसा मेरा विश्वास है । इसकी प्राप्ति के लिए आभारी हूँ ।

सादर,
शकुन्तला बहादुर
13669 Ronnie Way, Saratoga,
California -95070 ,USA

प्रधान संपादक
श्रीमती पूनम जुनेजा
संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, श्रीमती विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 6761196
Fax (230) 6761224
E-mail : whsmauritius@intnet.mu / sgwhs@intnet.mu
whsmauritius@gmail.com

Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul - Pailles
Tel: 208 1317